



वैदिक ज्योतिष (Jyotish) में, विवाह में विलंब तब होता है जब प्राथमिक संबंध कारक - जैसे कि सप्तम भाव (7th House), उसका स्वामी ग्रह, बृहस्पति (महिलाओं के लिए) या शुक्र (पुरुषों के लिए); शनि, राहु, केतु या मंगल के अशुभ प्रभावों से पीड़ित होते हैं।

उपायों का मुख्य उद्देश्य इन नैसर्गिक कारकों (कारक ग्रहों) को मजबूत करना और विवाह में बाधा बन रहे कर्म जनित अवरोधों को दूर करने के लिए अशुभ प्रभावों को शांत करना है।

विवाह में देरी के लिए प्राथमिक उपाय

1. बृहस्पति (गुरु) को मजबूत करना

बृहस्पति मुख्य विवाह कारक (महिलाओं के लिए विवाह का कारक) हैं और यह दैवीय कृपा, ज्ञान और परिवार के विस्तार का संचालन करते हैं।

- गुरुवार का उपवास (बृहस्पतिवार व्रत):** गुरुवार को व्रत रखें, पीले वस्त्र पहनें और दिन में एक बार बिना नमक का भोजन ग्रहण करें।
- पूजा एवं भोग:** गुरुवार के दिन केले के पेड़ या भगवान विष्णु को चना दाल, हल्दी और पीले फूल अर्पित करें।
- मंत्र साधना:** गुरुवार के दिन गुरु बीज मंत्र (ॐ ग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुरवे नमः) का 108 बार जप करें।

2. शुक्र को मजबूत करना

शुक्र प्रेम, सद्भाव, आकर्षण का प्रतिनिधित्व करते हैं और पुरुषों के लिए विवाह के प्राथमिक कारक हैं।

- शुक्रवार का उपवास:** शुक्रवार के दिन व्रत रखें और देवी लक्ष्मी को सफेद मिठाई, खीर या सफेद फूल अर्पित करें।
- दान-पुण्य:** शुक्रवार के दिन महिलाओं को या पूजा स्थलों पर सफेद वस्तुएं—जैसे कपूर, चावल, चीनी या रेशमी वस्त्र—दान करें।
- मंत्र साधना:** शुक्रवार के दिन शुक्र बीज मंत्र (ॐ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः) का 108 बार जप करें।

3. देवी-देवता पूजन एवं अनुष्ठान

स्वयंवर पार्वती जप: स्वयंवर पार्वती मंत्र का जप विवाह की बाधाओं को दूर करने के लिए एक अत्यंत प्रभावशाली पारंपरिक अभ्यास माना जाता है।

गौरी शंकर रुद्राक्ष: असली गौरी शंकर रुद्राक्ष (जो शिव और पार्वती के दिव्य मिलन का प्रतीक है) धारण करने से व्यक्तिगत ऊर्जा को वैवाहिक जीवन के अनुकूल बनाने में सहायता मिलती है।

Gauri Shankar Rudraksha



astroarpitanath.com

- **कात्यायनी व्रत और मंत्र:** उपयुक्त जीवनसाथी की इच्छा रखने वाली महिलाओं द्वारा ऐतिहासिक रूप से पालन किया जाने वाला यह उपाय है, जिसमें शुक्रवार या नवरात्रि के दौरान कात्यायनी मंत्र (ॐ कात्यायनि महामाये महायोगिन्यधीश्वरि...) का जप किया जाता है।

4. अशुभ ग्रहों के विशिष्ट निवारण

यदि विलंब विशिष्ट दोषों या दुष्प्रभावों के कारण हो रहा है, तो लक्षित उपाय लागू होते हैं:

- **शनि जनित विलंब (सप्तम भाव में शनि):** शनिवार को वृद्धाश्रम या शनि मंदिर में सेवा करें और रिशतों के चुनाव में धैर्य बनाए रखें।
- **राहु/केतु का दुष्प्रभाव:** सोमवार के दिन शिवलिंग पर चुटकी भर चंदन पाउडर या कच्चा दूध मिला जल अर्पित करें।
- **मंगल दोष:** मंगल की उग्र ऊर्जा को शांत करने के लिए कुंभ विवाह का अनुष्ठान कराएं या मंगलवार को हनुमान चालीसा का पाठ करें।

3 व्यावहारिक जीवनशैली और ऊर्जा संतुलन के उपाय

- **उत्तर-पूर्व और दक्षिण-पश्चिम वास्तु:** सकारात्मक ब्रह्मांडीय ऊर्जा के प्रवाह को बनाए रखने के लिए घर के उत्तर-पूर्व (ईशान) कोण को साफ और अव्यवस्था-मुक्त रखें। दक्षिण-पश्चिम (संबंधों का क्षेत्र) स्थिर होना चाहिए और वहां दर्पण या जल तत्व नहीं होने चाहिए।
- **स्नान के जल में हल्दी का उपयोग:** गुरुवार के दिन अपने दैनिक स्नान के जल में एक चुटकी प्राकृतिक हल्दी पाउडर मिलाने से बृहस्पति की ऊर्जा (ऑरा) संतुलित होती है।

- **फूलों वाले पौधे:** रहने के मुख्य कक्ष (लिविंग एरिया) में ताजे गुलाबी या पीले फूलों वाले पौधे रखने से गर्मजोशी और सौहार्दपूर्ण सामाजिक ऊर्जा को प्रोत्साहन मिलता है।

<https://astroarpitanath.com/hindi/remedies-for-delayed-marriage/>

ज्योतिष केवल मार्गदर्शन के लिए प्रदान किया जाता है। जीवन के महत्वपूर्ण निर्णयों के लिए, कृपया किसी योग्य पेशेवर से परामर्श लें।